

एवियन इनफ्लुएंजा अर्थात बर्ड फ्लू के कारण एवं बचाव

डा. डॉ संजय कुमार मिश्र¹ एवं डॉ. पारुल²

1 पशु चिकित्सा अधिकारी पशुपालन विभाग मथुरा उत्तर प्रदेश

2, सहायक आचार्य, वेटनरी पब्लिक हेल्थ, दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश

बर्ड फ्लू पालतू एवं जंगली पक्षियों की एक *अति संक्रामक* बीमारी है , जिसमें बिना किसी लक्षण से लेकर बहुत उच्च मृत्यु दर जैसी प्रक्रियाओं की पूरी तस्वीर देखने को मिल सकती है। इस बीमारी की ऊष्मायन अवधि भी अत्याधिक अस्थिर रहती है जोकि कुछ दिनों से 1 सप्ताह तक हो सकती है।

कारण

बर्ड फ्लू संक्रमण, एवियन इनफ्लुएंजा विषाणु के कारण होता है । सामान्यता इसके तीन प्रकार होते हैं ए, बी एवं सी। पक्षियों में केवल "ए" प्रकार पाया गया है। A प्रकार मनुष्य, सूअर, घोड़ा एवं अन्य स्तनधारी पशुओं में भी पाया जाता है। "बी" एवं "सी" प्रकार केवल मनुष्यों में पाया जाता है। एवियन इनफ्लुएंजा के 15 विभिन्न उप प्रकार होते हैं। कुछ उप प्रकार बंदी पक्षी जैसे तोता , कोयल और फिंच में पाए गए हैं और इन पक्षियों में संक्रमण का महत्व अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। यह विषाणु नेवले , बिल्ली, चूहे, शूतुरमुर्ग एवं चूहे की अन्य प्रजातियों में भी बन सकता है। बर्ड फ्लू का संक्रमण मुख्य रूप से पक्षियों को प्रभावित करता है परंतु कई मामलों में यह मनुष्य को भी संक्रमित कर सकता है। एवियन इनफ्लुएंजा को दो नस्लों में बांटा गया है।

1. *एलपीएआई/लो पथोजेनिक एवियन इनफ्लुएंजा* कम या कोई बीमारी के लक्षण नहीं दिखाई देते हैं।

2. *एच पी ए आई/ हाईली पथोजेनिक एवियन इनफ्लुएंजा* इसमें उग्र नएदनिक लक्षण एवं उच्च मृत्यु दर देखने को मिलती है।

बर्ड फ्लू के लक्षण:

H5N1 के संक्रमण के मामले में मतली और उल्टी जैसे लक्षण शामिल है। अन्य सामान्य लक्षणों में खांसी बुखार सिर दर्द दस्त सांस लेने में कठिनाई, नाक बहना, गले में खराश, मांसपेशियों में दर्द हो सकता है।

रोग का फैलाव:

यह विषाणु मुख्य रूप से मल के माध्यम से संक्रमित दाना एवं पानी से फैलता है। संक्रमित पक्षी लार, नाक के स्राव और मल में फ्लू के विषाणु विसर्जित करते हैं तथा इनके संपर्क से रोग फैल सकता है।

अतिसंवेदनशील पक्षी जब दूषित उत्सर्जन या संक्रमित सतहों के साथ संपर्क में आते हैं तो वह भी संक्रमित हो जाते हैं। यह बीमारी मनुष्य पशुओं उपकरण वाहनों की आवाजाही पड़ोसी झुंड के साथ संपर्क कीड़े, चूहे, आवारा पशुओं और पालतू पशुओं के साथ संपर्क दूषित पानी यह पर्याप्त सफाई ना होने इत्यादि कारणों से भी हो सकती है। एवियन इनफ्लुएंजा विषाणु आमतौर पर इंसानों को संक्रमित नहीं करता है।

विषाणु का प्रभाव:

एवियन इनफ्लुएंजा का विषाणु स्वाभाविक रूप से पक्षियों में होता है। विश्व भर के जंगली पक्षियों की आंतों में यह विषाणु पाया जाता है। किंतु आमतौर पर उनमें बीमारी नहीं मिलती है। लेकिन बर्ड फ्लू मुर्गी बत्तख टर्की और कुछ पालतू पक्षियों में बहुत संक्रामक है तथा उन्हें बहुत बीमार कर देता है जिससे उनकी मृत्यु हो सकती है।

भारत में बर्ड फ्लू की स्थिति

भारत में एचपी एआई का पहला प्रकोप नवपुर महाराष्ट्र में 2006 में देखा गया था। अंतिम प्रकोप की सूचना अगस्त 2013 में छत्तीसगढ़ से मिली थी। वर्तमान स्थिति में 11 नवंबर 2013 से देश रोगमुक्त है। देश भर में भारत सरकार पशुपालन विभाग के द्वारा निगरानी की जा रही है। भारत में मनुष्यों में अभी तक कोई मामला सामने नहीं आया है।

पक्षियों में नैदानिक लक्षण

ब्रायलर में रोग के लक्षण अक्सर कम स्पष्ट होने के साथ गंभीर अवसाद भूख की कमी तथा आम तौर पर मृत्यु दर में उल्लेखनीय वृद्धि 90 से 100% हो सकती है। 24 से 48 घंटे के अंदर मृत्यु चेहरे और गर्दन की सूजन तथा गति भंग जैसे न्यूरोलॉजिकल लक्षण भी देखे जा सकते हैं। कलगी और झालर में सूजन, आंखों के लक्षण अधिक पानी का सेवन पहले सफेद फिर हरे दस्त आंखों के आसपास सूजन आंखों और नाक से पानी का प्रवाह भी अक्सर देखा जाता है। युवा पक्षी न्यूरोलॉजिकल लक्षण प्रदर्शित कर सकते हैं।

उपचार

इस बीमारी का कोई उपचार नहीं है।

जैव सुरक्षा के सिद्धांत

संक्रमित स्थान में संक्रमित पशुओं और दूषित सामग्री के प्रवेश को सीमित करने के लिए बाधाओं का निर्माण और रखरखाव। इस प्रक्रिया को ठीक से लागू करने से ज्यादातर संक्रमण को रोका जा सकता है।

परिसर में प्रवेश करने या छोड़ने वाले वाहन व एवं उपकरणों को अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए। इससे सामग्री को दूषित कर रहे अधिकांश विषाणु निकल जाएंगे।